केवल निजी वितरण के लिए

मार्च २०११ भाग ४, अंक २

श्री राम चन्द्र मिशन®

India ECHOES
ONE WORLD ONE HUMANITY

चेन्नई में पोंगल

पोंगल मौसम के दौरान, मणपक्कम आश्रम अभ्यासियों की हलचल से भरा था। मालिक ने अनेकभारतीय और विदेशी अभ्यासियों के विवाह संपन्न करवाए और जिन विद्वानों ने मणपाक्कम और नेतरामपल्ली आश्रम में एकमाह का प्रशिक्षण पूर्ण किया था उन्हें प्रमाणपत्र वितरित किए। भाई लिंगास्वामी, एक अभ्यासी एवं जानेमाने तमिल फ़िल्म डायरेक्टर को उनके फ़िल्मी समूह के साथ कॉटेज में मास्टर के चित्र लेते हुए एवं आश्रम में घुमते हुए देखा गया। कुछ चित्र तब भी लिये गए जब मास्टर बाबूजी मंडप के पास बैठे हुए अभ्यासियों के समुह से वार्ता कर रहे थे।

१३ जनवरी को मास्टर ने कार्य समिती की मीटिंग संचालित की। बाद में कार्यकर्ताओं के साथ एक अनौपचारिक वार्ता में मिशन का कार्य करने के लिए उचित उम्मिदवार के चयन की आवश्यक्ता पर बल दिया। उन्होंने कहा, "बाबूजी ने मुझे बताया,तुम चरित्रवान एवं पढे–लिखे व्यक्तियों का चयन करो और तब मैं उन्हें काबिलियत प्रदान करूँगा"।

१५ जनवरी को बाबूजी मेमोरियल आश्रम, चेन्नई में लगभग ४५०० अभ्यासी एवं ५०० बच्चे थे। सुबह मास्टर के सत्संग कराने के बाद, भाई आर.चक्रपाणी ने मास्टर के लिये अपने प्रेम की अभिव्यक्ति करते हुए एक आकर्षक वार्ता दी। उन्होंने पुराने तमिल गानों का प्रसंग लेकर उन्हें आध्यात्मिक्ता एवं मास्टर से जोडा।

१६ तारीख,'माट्टू पोंगल' दके दिन आश्रम के पशुओं का अभिवादन करने के लिये मास्टर ने पशुशाला मे जाकर प्रथागत रूप से उनका स्वागत किया। इस अवसर पर किसान अपने पशुओं को सजाते है और उनके स्वाथ्य को मनाते हैं।

इस अवसर के दौरान मास्टर अपनी दुबई यात्रा की तैयारी भी कर रहे थे जो की एक लंबे अंतराल के बाद उनकी विदेश यात्रा होगी। १९ जनवरी की सुबह वे दुबई के लिए रवाना हुए।

दुबई

दुबई में एस.एम.एस. एफ ध्यान केंद्र का उद्घाटन, २१ जनवरी २०११

आज के दिन को मध्य पूर्व क्षेत्र में एस.एम.एस. एफ की राह में एक ऐतिहासिक एवं नई शुरुआत के रूप मे याद किया जाएगा। १९९४ में जब मास्टर से यह पुछा गया था कि क्या इस क्षेत्र में कभी ध्यान केंद्र बनेगा? उन्होंने कहा था कि, "सिर्फ यदि आप लोग ध्यान करो और इसके लिए कडी मेहनत करो, उनकी (बाबूजी) कृपा से सब होगा"। मास्टर के अथक प्रयास तथा इस क्षेत्र के भ्रमण और पिछले २० वर्षो के दौरान उनके प्रेम एवं मार्ग–दर्शन का परिणाम है कि आज यहाँ, मध्य पूर्वी देशों में, १५०० से ज्यादा अभ्यासी एवं लगभग १०० प्रशिक्षक सहज मार्ग का अभ्यास कर रहे हैं।

१९ जनवरी २०११ को मास्टर एक हार्दिक स्वागत के साथ यहाँ दुबई में पधारे। यद्यपि यह दोपहर के खाने का समय था, मास्टर ने उनके स्वागत के लिए वहाँ एकत्रित हुए अभ्यासियों को पूजा कराने का निर्णय लिया। २० तारीख को ईरानियन कल्ब आडोटोरियम में अंतिम ध्यान कराया तथा यह याद दिलाया कि ६ साल पहले उन्होंने यहाँ पहली पूजा दी थी। बाद में उन्होंने इस क्लब के अधिकारियों को उनके पिछले वर्षों के दौरान दी गई मदद के लिए स्मृति चिन्ह प्रशंसा के तौर पर दिए।

२१ तारीख को मास्टर सेंटर का उद्घाटन करने के लिए नई दुबई में आए, जो की तीव्र विकसित हो रहे जुमेराह लेक टॉवर में है। मास्टर का आश्रम कमेटी एवं यु. ए. ई. प्रशिक्षकों ने स्वागत किया। उन्होंने धयान केंद्र को बाबूजी की याद में समर्पित किया।

भाग ४, अंक २ मार्च २०११
श्री राम चन्द्र मिशन®
एकोज़ इंडिया वार्तापत्र

लगभग ११०० अभ्यासी धैर्य पूर्वक छत पर खड़े थे और मालिक को देख रहे थे। अभ्यासियों की सुविधा के लिये कई स्थानों पर टेलिविजन स्क्रीन लगाए गए थे। गुरुदेव ने फीता काटा और पर्दों को अलग कर दिया जिससे कि पृष्ठभूमी में लगा सुन्दर दृश्य साफ दिखायी देने लगा। उसके बाद गुरुदेव ने केन्द्र की दीवारों पर लगे सहज मार्ग के गुरुओं के सन्देशों की ओर देखा।

सत्संग समापन के बाद गुरुदेव ने कहा कि अभी सम्पन्न हुए ध्यान के विषय मे काफी कुछ कहा जा सकता है। इसके पश्चात गुरुदेव ने एक स्मरणिका जारी की जिसमें उनकी उस क्षेत्र की यात्राओं की तस्वीरों को दर्शाया गया है। साथ ही उन्होंने एक डी.वी.डी.भी जारी की जिसमें गुरुदेव की चुनी हुई वार्ताएं सम्मिलित की गयीं हैं।

गुरुदेव ने अपने प्रवास के दौरान पाकिस्तान, कुवैत, बाहरीन, ओमान, ईरान, सऊदी, अल्जीरीया, ट्युनीशीया, और मिश्र से आये अभ्यासियों के छोटे-छोटे समूहों से मुलाकात की। इन सभी मुलाकातों के दौरान गुरुदेव ने अभ्यासियों को अपने प्राकृतिक और आत्मिक लेकिन गंभीर अन्दाज में कुछ प्रेरित करने वाले सुझाव दिये और अपनी ओर आकर्षित किया। उन्होंने पाकिस्तान से आए २० अभ्यासियों के एक समूह के साथ काफी समय व्यतीत किया। कुछ अभ्यासियों के लिये गुरुदेव के साथ रहने का यह प्रथम अवसर था।

अपने प्रवास के दौरान गुरुदेव कभी कभी अभ्यासियों के घर चले जाते, ध्यान कराते या आराम करते और आध्यात्मिक विषयों पर चर्चा करते लेकिन इन सभी के दौरान वे अभ्यासियों की आन्तरिक प्रक्रिया को जागृत करते रहे। गुरुदेव कुछ अवसरों पर बाजारों में सैर के लिये गये। गुरुदेव ने अपनी प्यार भरी उपस्थिती से इस क्षेत्र के वातावरण और यहां उपस्थित अभ्यासियों के हृदयों को छू लिया, ऐसा केवल वही कर सकते हैं।

मानवीय एकता के लिये बनाया गया एस. एम.एस.एफ. का नया ध्यान केन्द्र एक विशेष स्थान होगा। गुरुदेव ने हमें याद दिलाया कि केन्द्र का उपयोग समाज के

दुबई

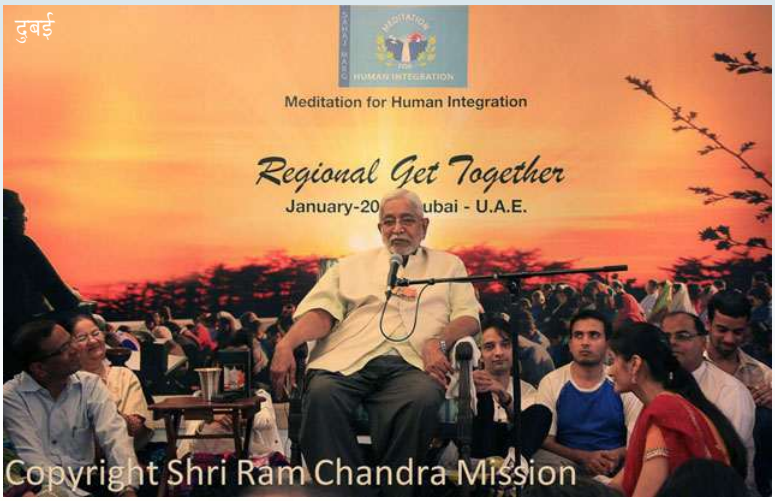

सभी वर्ग के लोग, बिना किसी जाती और धार्मिक भेद भाव के, व्यक्तिगत शान्ति प्राप्त करने और भावी पीढ़ियों को सामूहिक सोहाद्रता प्रदान करने के लिये कर सकेंगे।

गुरुदेव के मुख से निकले कुछ अनमोल रत्न:

- बाबूजी कहते थे "कुछ भी इतना आसान नहीं जितना कि वह दिखता है और कुछ भी इतना मुश्किल नही जितना वह दिखता है,कुछ भी!"
- एक अभ्यासी बहन गुरुदेव के पास आयी और बोली,"गुरुदेव मुझे आपकी सहायता चाहिये" गुरुदेव ने उत्तर दिया,"हम सभी को सहायता चाहिये, मैं तुम्हारी सहायता करूँगा, तुम मेरी सहायता करो, मै तुम्हारी सहायता करूँ और इसी प्रकार हम साथ-साथ चलें।" गुरुदेव बोले,"मैं मजाक नहीं कर रहा हूँ, मैं हँसता हूँ लेकिन मजाक नहीं करता हूँ, मैं गम्भीर हूँ, मैं अपनी सहायता देने का वचन देता हूँ, तुम भी मेरी सहायता करो।"
- "हमारी गोष्ठियाँ शिक्षा देने के लिये नहीं बल्कि प्रेरणा देने के लिये होनी चाहिये।"
- इस क्षेत्र में लोगों की जीवन शैली के बारे मे बातचीत करते हुए गुरुदेव ने कहा, "परिवर्तन आ रहा है, धीरे-धीरे आ रहा है किन्तु निश्चित रूप से आ रहा है...इस परिवर्तन का धैर्य और प्रार्थना के साथ इन्तजार करना चाहिये।"

गुरुदेव की उत्तर भारत यात्रा

२८ जनवरी से १३ फरवरी २०११ तक

दुबई मे १० दिन रुकने के पश्चात गुरुदेव २८ जनवरी को दिल्ली पहुँचे। २९ जनवरी को उन्होंने २ सत्संग कराये और उसके बाद ३० जनवरी को गुरुदेव गुडगाँव पहुंचे, वहाँ पर उन्होंने रविवार का सत्संग कराया, गुरुदेव ने नयी स्थापित द्रोणाचार्य की प्रतिमा का अनावरण भी किया। दोपहर के खाने के पश्चात गुरुदेव

दिल्ली

भाग ४, अंक २ मार्च २०११
श्री राम चन्द्र मिशन®
एकोज़ इंडिया वार्तापत्र

रुद्रपुर

अपने कार्यालय के बाहर आये और उन्होंने अभ्यासियों के प्रश्नों के उत्तर दिये। १ फरवरी को उन्होंने दो विवाह सम्पन्न कराए और उसके बाद रुद्रपुर के लिये प्रस्थान किया।

रुद्रपुर में लालाजी महाराज का जन्मदिवस समारोह

रुद्रपुर में वह बहुत ही अद्वितीय क्षण था, जब गुरुदेव ने अपने कार्यालय से सुबह ७:३० बजे सत्संग कराया। आसपास के केन्द्रों से करीब २०० अभ्यासी हमारे आदिगुरु लालाजी महाराज का जन्मोत्सव मनाने के लिये वहाँ एकत्रित हुये थे। गुरुदेव बहुत प्रसन्नचित्त दिख रहे थे और उनके साथ अभ्यासी भी खुशी से ओतप्रोत थे। गुरुदेव ने शाम का सत्संग ५ बजे कराया, उसके बाद भाई गुरप्रीत ने भजन प्रस्तुत किये। गुरुदेव की प्रसन्नता उस समय और भी बढ़ गयी जब कार्यक्रम का समापन 'आफ़ताबे मार्फत' के साथ हुआ। गुरुदेव ने हिमालय स्थित आश्रम सतखोल की यात्रा आरम्भ करने से पहले रुद्रपुर मे ठहरकर विश्राम किया।

नौकुचियाताल में प्रवास

४ फरवरी को गुरुदेव ने नौकुचियाताल के लिये प्रस्थान किया। नौकुचियाताल में गुरुदेव के कार्यालय का पुनर्निमाण किया गया है और गुरुदेव ने उसमे किये गये परिवर्तनों को बहुत पसन्द किया। उन्होंने वहाँ अपने प्रवास को एक दिन बढ़ाने की घोषणा की। गुरुदेव प्रतीदिन सुबह और शाम अपने कार्यालय से ही सत्संग कराते थे। लगभग २०० अभ्यासी कमरों और बालकनी में बहुत ही अनुशासन के साथ बैठते थे। अगले दिन एक अनौपचारिक वार्ता में उन्होंने खुशी और दु:ख के बारे में बोलते हुये कहा कि खुशी व्यक्ति को कमजोर बनाती है और दु:ख उसे मजबूत बनाता है। एक आगन्तुक ने गुरुदेव से पूछा कि जब हमारे हृदय पहले से ही शुद्ध हैं तो फिर हमें आध्यात्मिक अभ्यास की क्या जरुरत है?गुरुदेव ने कहा कि शुद्ध हृदय ही काफी नही है, यह तो मूलभूत आवश्यकता है। जब हमारे हृदय शुद्ध हो जाते है तब हमें वहाँ दिव्यता को लाने की जरुरत है। गुरुदेव ने रविवार सुबह का सत्संग करवाने के बाद सतखोल के लिये प्रस्थान किया।

नौकुचियाताल

सतखोल में बसन्त पंचमी

गुरुदेव ६ फरवरी को सुबह ११ बजे सतखोल पहुँचे। खराब सड़कों के कारण उनकी यात्रा असुविधाजनक रही। जो अभ्यासी बिना अनुमति लिये वहाँ आये थे, उन्हें दोपहर के भोजन के बाद चले जाने के लिये कहा गया। ७ फरवरी को सुबह ९ बजे सत्संग कराने के बाद गुरुदेव ने दो विवाह सम्पन्न कराये और पुस्तकालय तथा गोष्ठी–कक्ष का उद्घाटन किया, साथ ही साथ उन्होंने प्रस्ताव दिया कि हमें एक गोष्ठी अपने इस प्रवास के दौरान ही रखनी चाहिये। गुरुदेव ने ८ फरवरी की सुबह ९ बजे बसन्त का सत्संग कराया। गुरुदेव अब कुछ वर्षों से बसन्त पन्चमी का दिन नियमित रुप से सतखोल में ही मनाते हैं। सत्संग के बाद गुरुदेव काफी थके हुये थे लेकिन फिर भी वे मिशन के नये प्रकाशन का विमोचन करने के लिये वहाँ बैठे रहे। इसके बाद गुरुदेव 'प्रबन्धन के सिद्धान्त' विषय पर एक गोष्ठी में सम्मिलित हुये। गोष्ठी का संचालन एक अभ्यासी भाई, जोकि एक संगठन विशेषज्ञ हैं, ने किया था। इस डेढ़ घंटे की वार्ता का गुरुदेव ने गहन आनन्द लिया और उसके बाद वे काफी तरोताजा दिखायी दिये। फिर वे रास्ते में देवदार के विकसित वृक्षों को ध्यान से देखते हुये पैदल चलकर अपने कार्यालय पहुँचे। दोपहर को कार्यालय के सामने एक पिकनिक का आयोजन किया गया था जिसमें गुरुदेव ने सबके साथ भोजन किया।

हल्द्वानी में नये आश्रम का उद्घाटन

९ फरवरी को गुरुदेव ने रुद्रपुर के लिये प्रस्थान किया। ११ फरवरी की सुबह वे नवनिर्मित आश्रम के उद्घाटन के लिये हल्द्वानी केन्द्र आये। उनके वहाँ पहुँचने पर उनका स्वागत रास्ते में पताकायें (इस क्षेत्र में सजावट का परम्परागत तरीका) लगाकर किया गया। गुरुदेव ने आश्रम की स्थापना–शिला का अनावरण किया और फीता काटने के बाद वे अपने कार्यालय में चले गये।

भाग ४, अंक २ मार्च २०११
श्री राम चन्द्र मिशन®
एकोज़ इंडिया वार्तापत्र

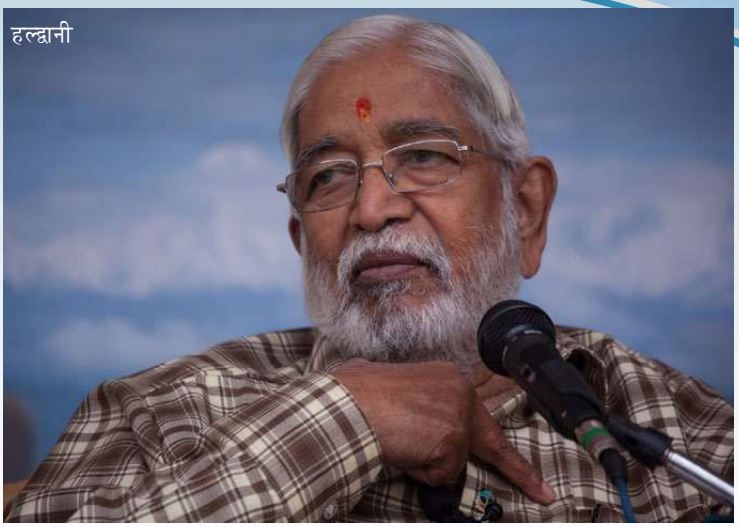
हल्द्वानी

रंगीन पारम्परिक वस्त्र पहने हुए स्थानीय बहनों ने गीत सुनाए। तब मास्टर ने बाबूजी महाराज को प्रसाद अर्पित किया। रसोईघर में चूल्हे का उद्घाटन करने के पश्चात वे बालकनी में गए जिसे उनके लिए स्टेज बनाया गया था। वहाँ से मालिक ने १२०० अभ्यासियों को सत्संग कराया। तत्पश्चात मास्टर ने एक वार्ता दी और कहा कि आश्रमों का उपयोग केवल आध्यात्मिक प्रगति के लिए होना चाहिए। वे अभ्यासियों के साथ धूप में बैठे और ध्यान के दौरान हुए उनके अनुभवों को सुना। दोपहर के भोजन के पत्श्चात, मास्टर रुद्रपुर लौट गए।

सफर के दौरान की गयी कुछ टिप्पणियाँ

- ❖जब तुम कठिन परिश्रम करते हो, हृदय से काम करते हो तो कोई आपका नुकसान नहीं कर सकेगा।
- ❖इच्छा–शक्ति निर्णय लेने और उस निर्णय को कार्यान्वित करने के बीच का बल है, जैसे कि मस्तिष्क में अन्तरग्रथन।
- ❖सक्रिय इच्छा–शक्ति अनुशासन है।
- ❖प्रेम करने की अनिच्छा प्रेम करने कि असमर्थता से भिन्न है।
- ❖बाबूजी द्वारा उद्धत, मास्टर ने कहा – "चिंता दिशाहीन विचार है"।
- ❖खुशी क्षणिक है लेकिन हर्ष एक स्थिति की अवस्था है।

१२ तारीख की शाम को मास्टर ने अपने कॉटेज के बाहर विदेशी अभ्यासियों के एक समूह द्वारा प्रस्तुत गीत और बाँसुरी वादन का आनन्द लिया। अगले दिन उन्होंने रविवार के सत्संग का संचालन किया और दिल्ली के लिए रवाना हो गए। रास्ते में वे दोपहर के भोजन के लिए मुरादाबाद में रूके।

जोधपुर की एक यादगार यात्रा

मास्टर के इस दौरे में दस वर्ष के अन्तराल के बाद जोधपुर की एक छोटी यात्रा भी शामिल है। पूरे राजस्थान से आए तीन हजार अभ्यासियों ने यह महसूस किया कि यह ध्यान–कक्ष मालिक की ओर से इस मरूस्थल के लिए एक आध्यात्मिक मरुद्यान का तोहफा है।

मास्टर १५ फरवरी को दिल्ली से हवाई जहाज द्वारा आए और अपने साथ चमकदार धूप और दो दिनों से हो रही वर्षा से राहत लेकर आए। रुद्रपुर और दिल्ली की लम्बी यात्रा के बावजूद वे काफी तरोताजा दिख रहे थे।

सभी अभ्यासी प्रसन्नचित्त थे जब मालिक दो बार बाहर आए और उनसे बातचीत की। मालिक के कॉटेज के द्वार खुले रहे जब मालिक बाहर बैठे और उन्होंने बहुत देर तक अभ्यासियों से बातचीत की। एक बहन ने उनके पैर छूए तो मालिक ने कहा कि हमारी पद्धति में इसकी अनुमति नहीं है और अपने द्वारा किए गए कार्यों के परिणामों को सोचे बिना हमें ऐसे कार्य नहीं करने चाहिए। उन्होनें यह भी सलाह दी कि हमें उन सबके लिए भी प्रार्थना करनी चाहिए जो हमारी पद्धति के विरुद्ध थे और जिन्होंने अभ्यासियों को विरोधी बनाया।

१६ फरवरी को सुबह ९:१५ बजे मालिक ने जोधपुर आश्रम का उद्घाटन करने के पश्चात नए ध्यान–कक्ष में सत्संग कराया। बहन रंजना मेहता के कुछ भजन सुनाने के बाद मास्टर कार्यालय में गए और धूप का आनन्द लेते हुए अभ्यासियों से बातचीत की। वे शाम को बच्चों से मिलने के लिए बाहर आए जिन्होंने सांस्कृतिक कार्यक्रम में भाग लिया था।

१७ फरवरी को मालिक ने उन अभ्यासियो के प्रति निराशा प्रकट की जिन्होंने सत्संग में भाग नहीं लिया और कॉटेज में उनका इन्तजार करते रहे। सुबह ११:३० बजे मालिक ने सभी स्वयंसेवकों को सिटिंग दी। उत्कृष्ट स्थलों पर भ्रमण के विषय में बातचीत करते हुए मास्टर ने कहा कि ये गतिविधियाँ अधिकतर अहंभाव को बढ़ावा देती हैं, न कि कोई वास्तविक मूल्य। मास्टर दोपहर में दिल्ली के लिए रवाना हो गए।

मोरादाबाद

जोधपूर

नए प्रकाशन

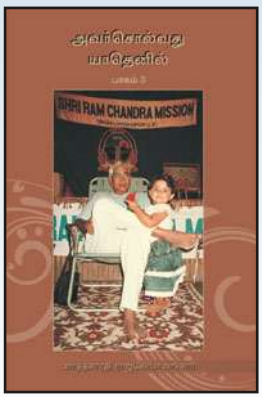

अवार सोलवधु यथेनील–३
तमिल

दिल की आवाज़ २००६
कन्नड

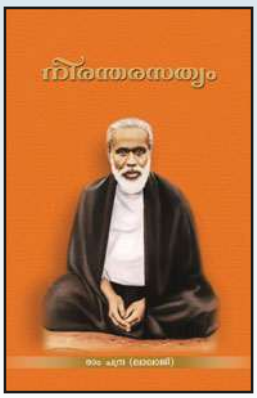

शाश्वत सत्य
मल्यालम

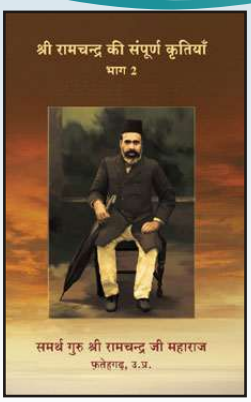

श्री रामचंद्रकी संपूर्ण
कृतिया

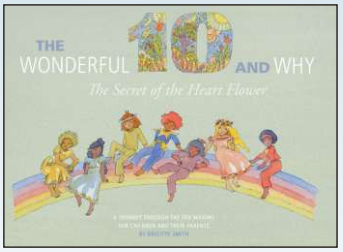

द वंडरफूल १० ॲन्ड व्हाय
स्पेनिश, डेनिश, इटालियन, जर्मन,
अंग्रेजी, हिंदी, फ्रेंच और पोर्तुगीज मे

बसंत पंचमी के दिन गुरुदेव ने यह प्रकाशने प्रकाशित की।

दिल की आवाज़ २००८
मराठी

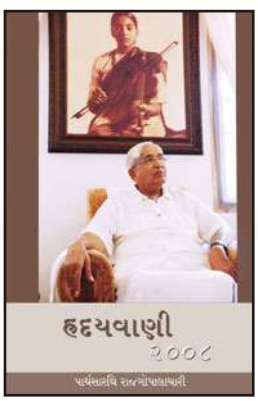

दिल की आवाज़ २००८
गुजराथी

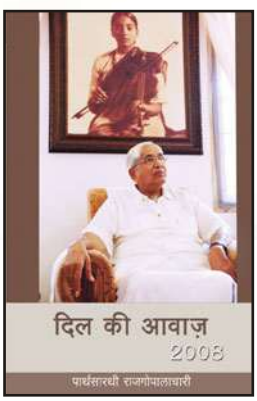

दिल की आवाज़ २००८
हिंदी

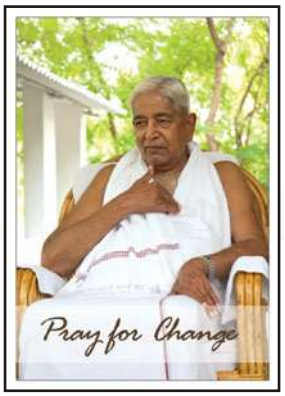

प्रे फॉर चेंज
डी व्ही डी संच

घोषणाएँ

नई नियुक्तियाँ

अजय कुमार भट्टर
जोन प्रभारी, पच्छिम बंगाल (जोन १३)

मिसल मेहता
केंद्र व्यवस्थापक, कोलकाता केंद्र

दीपक शाह
केंद्र प्रमुख हल्दवानी

अनिल सिंग बिष्ट
आश्रम व्यवस्थापक, हल्दवानी

मास्टर का जन्मोत्सव

मास्टर ने अपना ८५ जन्मदिन मनाने की अनुमती हमे दे दी है जो की डायमंड जुबली पार्क, तिरूपुर (तमिलनाडु) में २३ जुलाई से २५ जुलाई तक मनाया जाएगा। यह भारत में राष्ट्रीय स्थर का उत्सव होगा। सभी अभ्यासी प्रिय गुरूदेव की उपस्थिति में उत्सव मनाने के लिये आमंत्रित है।

अतीत पर एक नजर

बाबूजी मलेशिया के विदेशी दौरे की पूर्व संध्या पर कुछ दिनों के लिये चेन्नई में थे। निम्नलिखित उदाहरण मास्टर की डायरी से है।

रविवार, ३ अप्रैल, १९७७:

बाहर गांव के अभ्यासी रविवार के सुबह के सत्संग में सहभागी हो सकें इसलिए सत्संग का समय बदलकर ९ बजे कर दिया गया। घर अभ्यासियों से भरा हुआ था, मिशन के नेल्लोर केंद्र से अभ्यासियों से भरी एक और बस आने से समूह बढ गया। यह अनुमान लगाया गया कि उस सुबह गायत्री में ५०० से अधिक अभ्यासी थे। उपर की छत, नीचे का कक्ष, बाहर का बरामदा, प्रवेश मार्ग, सभी क्षमता से ज्यादा भरे थे। वहाँ बसंत पंचमी का वातावरण था। ४० मिनट तक मास्टर ने अपने कमरे से अभ्यासियों को प्राणाहुती दी। वह बहुत अच्छा ध्यान था।

ध्यान के बाद सभी अभ्यासियों को नाश्ते में इड्ली, वडा, चाय और केला दिया गया, यह सेवा डेढ घंटे तक चली। ११:३० तकसभी लोग वहां से चले गए ताकी मास्टर आराम कर सकें। इड्ली और सांभर के हलके नाश्ते के बाद मास्टर ने दोपहर में पूर्णत: आराम किया। अभ्यासियों के ४ बजे पुन: एकत्रित होने से, घर फिर से भर गया। घर के उपरी और निचली मंजिल पर प्रशिक्षक श्री. एस.के.राजागोपालन, श्री.सी. ए. राजागोपालाचारी और श्री. वी. ने भाषण दिए। वहाँ प्रश्न–उत्तर का सत्र भी था। पुन: शाम ६:३० बजे, मास्टर ने २० मिनट के लिए सत्संग आयोजित किया। रात्रि के भोजन के बाद मास्टर बसंत नगर चले गए। सभी के लिए यह दिन बहुत आनंदपूर्ण और आध्यात्मिक लाभ से परिपूर्ण था। मास्टर यह देखकर बहुत खुश थे कि उन्हें मिलने के लिए दूर–दूर से इतने अभ्यासी आए थे। शाम को आंध्रा केंद्र से तीन बसों में आए अभ्यासियों का समूह वापस चला गया। वास्तव में, शाम के समय तक सभी अभ्यासी अपने घर चले गए।

भाग ४, अंक २ मार्च २०११
श्री राम चन्द्र मिशन®
एकोज़ इंडिया वार्तापत्र

पूज्य लालाजी महाराज का १३९वा जयंती महोत्सव

"खुशी कहीं बाहर नहीं है । यह हमारे मन को स्थिर करने में है, हमारे स्वभाव की स्थिरता, और हमारे मन को बाहर से खींचकर अंतरमुखी करने में है। जिन्हे इस रहस्य का ज्ञान है, उन्हें खुशी को कहीं बाहर तलाशने की जरूरत नहीं है।"

– लालाजी महाराज

जोधपूर

बेंगलोर

समर्थ गुरु लालाजी महाराज, हमारे मिशन के आदि–गुरु, का १३९ वा जन्मोत्सव देश के विभिन्न केन्द्रों में बहुत उत्साह और भक्ति–भावना से मनाया गया । लगभग सभी केन्द्रों में उत्सव की शुरुआत सुबह ७:३० बजे के ध्यान से हुई । बहुत लोगों ने लालाजी के जीवन पर बनी फिल्म देखी, मास्टर की लालाजी के बारे में बातों पर चर्चा की, "शाश्वत सत्य" के बारे में बातें की, कुछ भजन, अभ्यासी और बच्चों द्वारा लघुनाटिका एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम, ओपन हाऊस सत्र और २०१० की निबंध प्रतियोगिता का इनाम वितरण किया गया । दिन के कार्यक्रम का अंत शाम के सत्संग के साथ हुआ ।

हुबली

इन गतिविधियों के अलावा इलाहबाद (उत्तर प्रदेश) केंन्द्र में दंत चिकित्सालय का उद्घाटन, डॉक्टर वी. के. अगरवाल द्वारा हुआ । निबंध प्रतियोगिता के प्रमाणपत्र बाँटे गए । इंदौर (एम पी) में आश्रम की नई जमीन पर ८०० अभ्यासी एकत्रित हुए और एक आत्म निरिक्षण सत्र जिसका शीर्षक था 'परिवर्तन जो मैं अपने आप में देखता हूँ' का आयोजन किया गया जिसमें अभ्यासियों ने अपने अनुभव व्यक्त किए । विजयवाडा (आंध्र प्रदेश) में वार्ताओं के अतिरिक्त गुरुदेव की शिक्षाओं पर आधारित ४०० अभियासियों के लिए प्रश्नोत्तरी का आयोजन किया गया । हैदराबाद के तुमकुंठा आश्रम में दिल मोहने वाली 'गुरु पादुकाभ्यम' नृत्य प्रस्तुती के अलावा २००० अभियासियों ने लघुनाटिका 'आत्म प्रतिबिंब की शक्ति' को देखा ।

इंदौर

अंगुल (उडिसा) में १२० से ज्यादा अभ्यासियों ने लालाजी के जीवन पर एक वार्ता एवं फिल्म देखी तथा एक खुले सत्र एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया । राष्ट्र की राजधानी दिल्ली में दो लघुनाटिकाओं – 'लक्ष्य' एवं 'कठपुतली' द्वारा इच्छा से इच्छाहिनता तथा समपर्ण के द्वारा संस्कारों से मुक्ति को चित्रित किया गया ।

लालपानिया

कर्नाटक में, उपकेन्द्रों जैसे चिनचोली, चित्तपुर, वाडी, शाहपुर तथा सेदम से लगभग ३५० अभ्यासियों ने गुलबर्गा केंद्र पर उत्सव मनाया । सिरसी, बेलुर, धारवाड, कल्लुर, गडग, नवनगर, नवलगुंड तथा हावेरी से लगभग २४० अभ्यासियों ने हुबली में उत्सव में भाग लिया । युवा समूह ने बहुत अच्छे तरीके से 'गरुड का द्वंद' यह लघुनाटिका प्रस्तुत की । बैंगलोर में १५०० अभ्यासियों ने परमधाम आश्रम में उत्सव मनाया जिसमें गुरुदेव एवं उनकी शिक्षाओं तथा भंडारो कि यादों के ऊपर वार्ताएं हुईं । मैंगलोर तथा कोलेगाल में लालाजी की शिक्षाओ एवं लेखों पर धयान केंद्रित किया गया।

हैद्राबाद

जोधपुर (राजस्थान) में जैसलमेर रोड पर केरू गाँव के पास आश्रम की नई जगह पर उत्सव हुआ। गुरू–शिष्य के प्रेम को चित्रित करते हुए रोचक लघुनाटिका बोर्ड पर लगाई गई । गुहाटी और तिनसुकिया में , 'देखो, पालन करो एवं उनका अनुशरण करो' इस विषय पर वार्ताए दी गयीं ।

तिरुनेलवेली (तमिलनाडु) में भाई ए. पी. दुरई (संयुक्त सचिव) उत्सव के लिये उपस्थित थे । जिसमे कन्याकुमारी, पनागुडी, कोलियनकुलम, वडाकंगुलम, तूतीकोरिन, तेनकाशि, नागरकोल, राजापलियम, कोविलपट्टी तथा थोबलई से लगभग २५० अभ्यासियों ने इस उत्सव में हिस्सा लिया । तीन बहनों ने लालाजी के लेख, उनके जीवन एवं उनके उपदेश पर बहुत ही उमदा और संक्षिप्त वार्ता दी । मास्टर की शिक्षाओं पर समुह वार्तालापों के बाद प्रस्तुतियाँ हुई । दोपहर के खाने के बाद 'पिक एन्ड टॉक' सत्र हुआ जिसमे अभ्यासियों को दिये हुए विषय पर बोलना था ।

मेंगलोर

भाग ४, अंक २ मार्च २०११
श्री राम चन्द्र मिशन®
एकोज़ इंडिया वार्तापत्र

प्रकाश का नया केन्द्र – तंजावुर

तमिलनाडु का तंजावुर जिला हमारे मालिक का मूल निवास स्थान है। उनकी लंबे समय से यह दिली इच्छा रही है कि मिशन का एक आश्रम यहाँ स्थापित हो। कई वर्षों की खोज के बाद यहाँ के अभ्यासी एक उपयुक्त जमीन ढूंढने में सफल हुये हैं जो कि थिरुवरुर की ओर जाने वाले मार्ग से १४ किलोमीटर की दूरी पर है। मालिक की ईच्छानुसार १० एकड़ का एक उपवन अर्जित किया गया है जो नारियल, जंगली साडु और आम के पेड़ो से भरा हुआ है।

साथ ही २० एकड़ की ज़मीन अभ्यासी कॉलोनी के लिये नियोजित की गयी है, जिसमें ४००० वर्ग फीट के प्लाटों का आवँटन होगा। मालिक की इच्छा है कि प्लॉट बड़े हों और बागबानी के लिये पर्याप्त जगह मिले। इस क्षेत्र में पानी के पर्याप्त स्रोत हैं। प्लॉट की कीमत में सड़क, पानी, जल–निकास इत्यादि सम्मिलित है और अभ्यासी शीघ्र ही अपने घरों का निर्माण कर सकेंगे और आने वाले आश्रम के लिये सहयोग और उसका उपयोग कर सकेंगे।

विशाखापटनम मे 'तनाव प्रबंधन' पर कार्यशाला

भारतीय नौसेना के अफसरों और नाविकों के लिये 'तनाव प्रबंधन' पर कार्यशाला का आयोजन आई.एन.एस सतावाहन में ९ फरवरी को आयोजित किया गया। कार्यक्रम के एक दिन पहले प्रतिभागियों को पैम्फलेट्स बाँटे गये। कार्यक्रम की शुरुआत कमांडर श्रीराम अमुर के परिचय के साथ हुई जो सबमैरीन स्कूल के प्रभारी अफसर है। भाई वी.आर.एस. नागासर्मा ने 'ध्यान द्वारा समय और तनाव व्यवस्थापन' पर भाषण दिया और सहज मार्ग के बारे में समझाया। भाई जी.वी. रविंद्र ने हिंदी में एक भाषण दिया जिसके बाद एक संवादात्मक सत्र हुआ जिसमें विभिन्न पहलुओं पर स्पष्टीकरण दिये गये।

भाई के.एस. सप्तमुखुलु ने सारे १५० उपस्थितगणों को विशाखापटनम आश्रम आने का आमंत्रण दिया। कई प्रतिभागियों ने सहज मार्ग साधना में रुचि दिखायी और इच्छुकों को प्रारंभिक सीटींग दी गयी।

व्ही.बी.एस.ई. कार्यक्रम, बड़ौदा

बड़ौदा केन्द्र के व्ही.बी.एस.ई. स्वंयसेवकों ने अल्कापुरी के बड़ौदा हाई स्कूल के छठी और सातवी कक्षा के ४५ छात्रों के लिये 'टीम बिल्डिंग' विषय पर एक वर्कशॉप संयोजित की। वर्कशॉप का उद्देश्य था टीम भावना के महत्व को आनंदपूर्वक तरीके से समझाना। टीम बिल्डिंग के पाँच महत्वपूर्ण पहलुओं – प्रतिबद्धता, योगदान, सहयोग, संपर्क और मतभिन्नता को संभालना – को उपयुक्त प्रस्तुतियों और आभ्यासिक क्रियाओं द्वारा समझाया गया।

'बत्तख की उडान' प्रस्तुति के माध्यम से प्रतिबद्धता का मूल समझाया गया। चीजों को याद रखने और संपर्क संबंधित एक क्रिया के माध्यम से दो तरफा संपर्क की महत्ता पर जोर दिया गया। 'जितना जीत सको उतना जीतो' खेल के माध्यम से सहयोग और समान लक्ष्य के महत्व को समझाया गया।

छात्रों ने हर गतिविधि में ध्यान और उत्साह से भाग लिया। स्कूल ने भी कार्यक्रम को सराहा और छात्रों के लिये विभिन्न विषयों पर समान वर्कशॉप के लिये आमंत्रित किया।

प्रशिक्षकों की सभा, नेतरमपल्ली

नेतरमपल्ली आश्रम में ७ व ८ जनवरी को तमिलनाडु के लगभग ५५ प्रशिक्षकों के लिये एक सेमिनार आयोजित किया गया। भाई ए.पी. दुरई (संयुक्त अध्यक्ष) और भाई एस. प्रकाश (जोन प्रभारी) ने कार्यक्रम का संचालन किया। भाई प्रकाश ने केन्द्रों के विकास के लिये जरूरी बातों का उल्लेख किया और नये प्रशिक्षकों के चयन के मापदंड पर प्रकाश डाला। भाई दुरई ने कहा कि मालिक उन अभ्यासियों को सबसे ज्यादा महत्व देते हैं जो मिशन के कार्य में संलग्न है। प्रत्याशित प्रशिक्षक की योग्यता उसके मालिक के कार्य में संलग्नता से सिद्ध होती है। भाई पेरूमल (बैंगलोर क्रेस्ट के प्रबंधक) 'प्रशिक्षण की जरूरत' और भाई एन.एस. नागराज 'मिशन के विकास और चुनौतियाँ' इन विषयों पर बोले।

भाई प्रकाश ने सुनहरी शांति सत्र के दौरान चिंतन करने के लिये दस प्रश्न दिये। विभिन्न विषयों पर सामूहिक चर्चा हुयी जैसे 'दूसरों को चरित्र निर्माण के लिये कैसे प्रोत्साहित करें', 'घर में गोष्ठी और ओपन हाउस संचालित करने का अनुभव', 'सहज मार्ग के बारे में अंधविश्वास और उसे कैसे तोड़े', 'सिटिंग देने के अलावा हम मालिक के लिये क्या कर सकते है' और 'आदर्श अभ्यासी और आदर्श प्रशिक्षक का चित्रण'। दो खेल–क्रियाओं द्वाराप्रशिक्षकों में बहुत हँसी–मजाक हुआ। इस अवसर के माध्यम से प्रतिभागियों के बीच की असहजता को तोड़ा गया और सबको साथ लाया गया। पाँच के पेनल ने एक प्रश्नोत्तरी सत्र संचालित किया। कार्यक्रम का समापन एक क्रिकेट मैच से हुआ।

भाग ४, अंक २ मार्च २०११
श्री राम चन्द्र मिशन®
एकोज़ इंडिया वार्तापत्र

केरल, पालक्काड़ में कॉलेज के छात्रों को संबोधन

भाई रविन्द्रनाथन और भाई मोहनदास ए. के. ने मन्नमपट्टा, पालक्काड़ के भट्टथिरिपद कॉलेज के छात्रों को २७ दिसंबर २०१० को सहज मार्ग के संदर्भ में 'ध्यान' और 'ध्यान की जरुरत एवं लाभ' पर संबोधित किया।

व्यक्तित्व के विकास और दैनिक जीवन में एकाग्रता और अनुशासन लाने में ध्यान की भूमिका के बारे में विस्तार से बताया गया। भाई रविन्द्रनाथन युवाओं के स्वाधिकार और जीवन में लक्ष्य तय करने के महत्व पर बोले। उन्होनें छात्रो को इच्छाशक्ति के विकास, अहम के परिशोधन और आलस पर विजय पाने के लिए प्रोतसाहित किया।

प्रतिभागियों के एकाग्रता, क्रोध पर काबू इत्यादि विषयों पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दिये गये, जिसके बाद भाई वलसाकुमार ने सबको धन्यवाद देकर कार्यक्रम का समापन किया। प्रारंभिक सीटिंग के लिये उनकी संपर्क सूचना प्रतिभागियों में बाँटी गयी।

सामूहिक चर्चा, मुरादाबाद

मुरादाबाद योगाश्रम में ६ फरवरी को एक पूर्ण दिवसीय कार्यक्रम आयोजित किया गया। भाई श्रवण की प्रस्तावना वार्ता के बाद ५० से अधिक अभ्यासियों ने 'चरित्र निर्माण' पर चर्चा की। चरित्र निर्माण के विभिन्न पहलुओं को बारीकी से देखा गया। भाई राम, बहन नीलिमा और भाई अजित ने कार्यक्रम संचालित किया और प्रश्नों के उत्तर उत्साह से दिये।

शिक्षक विकास कार्यक्रम, बैंगलोर

बैंगलोर केन्द्र में इस कार्यक्रम के माध्यम से एक मंच रचा गया जिससे उन अभ्यासियों को सहायता–प्रशिक्षण मिल सके जो मिशन की गतिविधियों, जैसे ओपन हाऊस, वी बी एस ई, स्वागत डेस्क, घोषणा, युवाओं के कार्यक्रम इत्यादि, में रुचि रखते हैं।

कार्यक्रम के दौरान श्रोताओं को संबोधित करने से संबंधित अनेक पहलुओं को देखा गया, जैसे मूल–तत्व, भावभंगिमा, संबोधन कला, स्वर इत्यादि। तीन महीनों की अवधि में तीन सत्रों में बाँटे गये इस कार्यक्रम के पहले दो सत्र बनशंकरी आश्रम में रखे गये, और तीसरा सत्र क्रेस्ट में आवासिक कार्यक्रम के रूप में रखा गया।

कई अनुभवी वक्ताओं ने महत्वपूर्ण सहयोग दिया और अपने अनुभवों को बाँटा। प्रतिभागियों को विषय दिये गये जिस पर उन्हें ५–७ मिनट बोलना था, जिसके बाद उन्हें सुधार के लिये सुझाव दिये गये। क्रेस्ट के अंतिम सत्र में अभ्यासियों को उनकी निपुणता के अनुसार कार्य सौंप कर कार्यक्रम का समापन हुआ।

ऐसे कार्यक्रमों के माध्यम से अभ्यासियों को मिशन की गतिविधियों में शामिल होने के नये अवसर प्रदान किये जा सकते है। मालिक की कृपा से यह उनके स्वयं और मिशन के विकास में सहायक होंगे।

युवा पर ध्यान, हैदराबाद

लगभग १२० प्रतिभागियों के लिये ८ एवं ९ जनवरी को हैदराबाद के जोनल आश्रम मे एक 'युवा संग्रह' का आयोजन किया गया। जोनल प्रभारी भाई अनन्त ने कहा कि सांसारिक जीवन मे हम जो कुछ भी करे, उससे अवश्य ही हमारे आध्यात्मिक लक्ष्य मे भी मदद मिलनी चाहिये।

विडिओ एवं सीडी दिखाई गयी जैसे की 'मिलान यूथ वर्क शॉप','चीन में सेमीनार' एवं 'आध्यात्मिकता–एकता एवं भाईचारे की नयी सभ्यता'। प्रतिभागियों ने कुछ खेल खेले एवं उत्साहपूर्वक स्वयं सेवा का कार्य किया।

बाबूजी महाराज के जीवन पर फिल्म –समय में यात्रा (भाग–१) ने अभ्यासियों के दिलों को छू लिया। भाई अनंत, बहन मधुमती एवं भाई श्रीनिवास राव ने प्रश्न–उत्तर सत्र की अध्यक्षता की जिसमें साधना के ज्यादातर पहलुओं को सम्मिलित किया गया।

भाई रघू ने मिशन की गतीविधियों एवं प्रशासन के बारे मे एक प्रस्तुति दी जिनके बारे में बहुत से लोगों को जानकारी नहीं थी। कार्यक्रम मे कराये गये ६ सत्संगों ने भागीदारों को तीव्र आध्यात्मिक वातावरण मे अवशोषित होने में मदद की।

११से १३ फरवरी २०११ के बीच १५ युवा, वचनबद्ध एवं उत्साह से भरे भागीदारों के समूह के लिये एक 'विकसित होने के लिये शामिल हो' नाम की कार्यशाला का आयोजन किया गया। भाई अनंत ने कार्यशाला के विषय पर एक वार्ता दी। अनुसूची में एक आत्म–मंथन सत्र रखा गया था जिसमे– दो व्यक्तियों के बीच विचारों का आदान–प्रदान, छोटे समूहों में परस्पर आदान–प्रदान, प्रत्येक भागीदार के लिये व्यक्तिगत पूजा, हर भागीदार के लिये समूह प्रार्थना आदि का समावेश था। रात्रि के खाने के बाद युवाओं को आनन्दित करने के लिये एक सुन्दर फिल्म दिखाई गयी तथा आडिओ–विडिओ सत्र का आयोजन भी किया गया।

प्रत्येक सहभागीने ये चीजें अभिव्यक्त की जैसे – महत्वपूर्ण आन्तरिक परिवर्तन, अपनी उन्नति के लिये व्यक्तिगत भागीदारी के बारे मे व्यापक समझदारी और अपने क्रमागत विकास के लिये आन्तरिक प्रेरणा। सत्र समाप्ति की ओर जाते हुए– हम उनके चेहरों पर झलकता हुआ उनके विकास के लिये आन्तरिक विश्वास देख सकते थे। दोनों कार्यक्रमों की प्रतिक्रिया बहुत अच्छी थी तथा ज्यादातर सहभागियों ने कहा कि वे ऐसे और ज्यादा कार्यक्रमों मे भाग लेने को आतुर हैं।

भुवनेश्वर केन्द्र की अभ्यासी बहनों का उपक्रम

अक्टूबर २०१० से भुवनेश्वर केन्द्र की अभ्यासी बहनों ने मासिक गोष्ठीयों की शुरुआत की है। अभी तक चार गोष्ठियों का आयोजन किया गया है जहाँ कम से कम एक प्रशिक्षक की उपस्तिथि सुनिश्चित की गई थी। इसमें वे सहजमार्ग की कोई एक प्रमुख विशेषता को लेकर अपने अनुभव को आपस में बाँटते हैं तथा अभ्यासियों को यदि कोई स्पष्टीकरण चाहिये होता है तो उसका निवारण प्रशिक्षक द्वारा किया जाता है। शुरू की चार गोष्ठियों में ध्यान, सफाई, प्रार्थना और आश्रम आदि विषयों को समाहित किया गया । यह अवलोकित किया गया कि अभ्यासी बहनों के बीच इस तरह की आपसी चर्चा सहजमार्ग साधना की धारणा को स्पष्ट करने में सहायक होती है और धीरे–धीरे उन्हें पूर्ण दिवसीय क्रार्यक्रमों के दौरान विचारविमर्श में सक्रिय रूप से भाग लेने में सहायता मिलती है।

अभ्यासी बहनों ने केन्द्र के रसोईघर को भी पुर्नव्यवस्थित किया है तथा रविवार के प्रात:कालीन सत्संग के पश्चात अभ्यासीयों को स्वल्पाहार कराया जाता है।

पिछले तीन माह से प्रत्येक पूर्ण दिवसीय कार्यक्रम के दौरान विचारविमर्श के पश्चात सभी अभ्यासियों द्वारा आधे घंटे के लिये मौन रखा जाता है। वे यह प्रक्रिया अपने केन्द्र पर कार्य करते समय, पुस्तक पढते समय अथवा खुली आंखों से सिर्फ बैठे हुए भी अपनाते हैं। यह बहुत अच्छी तरह से कार्य कर रहा है एवं अब अभ्यासी इस तरह के मौन सत्रों की आतुरता से प्रतीक्षा करते हैं।

"दैनिक विचार"(डेली रिफ्लेक्शन) पर नई पहल

दैनिक विचार मिशन द्वारा प्रदान की गई एक मुफ्त ई मेल सेवा है जिसमें हमारे गुरूदेव द्वारा दिये गए संदेश को प्रतिदिन "ई मेल" द्वारा इसके पंजीकृत सदस्यों को भेजा जाता है। अभ्यासियों के बीच जागरुकता उत्पन्न करने हेतु १७ जनवरी २०११ को विदिशा, मध्य–प्रदेश में एक पूर्ण दिवसीय क्रार्यक्रम आयोजित किया गया। २५ दिन अभ्यासियों का दल," दैनिक विचार" का हिंदी रूंपान्तर पढ्ता था जो मिशन के साहित्य से प्राप्त किये गए थे। प्रत्येक अभ्यासी को एक संदेश दिया गया एवं उन्हें अपनी साधना, नैतिक व्यवहार, आचरण और समझ आदि का आत्मचिन्तन करने तथा सभी के साथ अपने विचार बाँटने को कहा गया।

विचार के विभिन्न विषय जैसे मौन की आवाज, मौन, समय, संस्कार, छापें, मिशन, ईश्वर की अनुभूति, मैं हूँ, बच्चे, मष्तिक, आश्रम, कार्य कैसे करें, हम मिले, धर्म और आध्यात्मिकता तथा विकास आदि थे। परिचर्चा में भाग लेने वाले अभ्यासी भाई बहनों की प्रतिक्रिया काफी उत्साहवर्धक एवं महत्वपूर्ण रही।

अभ्यासी प्रशिक्षण कार्यक्रम

अभ्यासी प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन भारत के विभिन्न केन्द्रों में किया जा रहा है । इन कार्यक्रमों का उदेश्य अभ्यासियों में सहज मार्ग पद्दती के प्रति जागरुकता पैदा करना तथा अभ्यासियों को अपनी साधना के विषय में उत्पन्न सवालों का हल मिलने में मदद करना है।

कार्यक्रम में ध्यान, सफाई, दस–सूत्र, प्रार्थना एवं सतत स्मरण को विस्तार से समझाया जाता है । प्रस्तुति के उपरान्त आयोजित प्रश्नोत्तरी सत्र में हमारे मन में उत्पन्न शक–सवाल का सही समाधान मिल जाता है। जिन केंद्रों में अभ्यासी प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये गए, उसका विवरण नीचे दिया गया है। इन केन्द्रों में प्रतिभागी अभ्यासियों की प्रतिक्रिया बहुत ही उत्साहजनक रही । अभ्यासियों ने कहा कि इस प्रशिक्षण से उन्हें साधना को एक सही सोच के साथ करने की प्रेरणा मिली है तथा उन्होंने साधना को गंभीरता से लेने की जरूरत महसूस की है। प्रशिक्षणार्थियों ने मत व्यक्त किया कि अभ्यासियों के लिए प्रशिक्षण क्रार्यक्रम नियमित रूप से आयोजित किये जाने चाहिए।

वलसाड

गुलबर्गा

रायचूर

मुंबई

वलसाड , गुजरात

भरुच, सूरत , नवसारी, वापी, खेरगाँव, किला, परडी और वलसाड से आये २४ अभ्यासियों ने वलसाड आश्रम में आयोजित कार्यक्रम में भाग लिया । इस कार्यक्रम का आयोजन गुजराती भाषा में किया गया।

गुलबर्गा, उत्तर कर्नाटक

भाई प्रह्लाद पाकनीकर ने २ जनवरी, २०११ को गुलबर्गा आश्रम में प्रशिक्षण का आयोजन किया जिसमें ४० अभ्यासियों ने भाग लिया ।

रायचूर , उत्तर कर्नाटक

भाई प्रहलाद पाकनीकर एवं भाई निजालिनगप्पा ने ९ जनवरी, २०११ को रायचूर आश्रम में ४० अभ्यासियों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया।

खारघर, नवी मुंबई

बहन नंदिता माथुर ने १५ अभ्यासियों हेतु एक अभ्यासी बहन के घर पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया।

जोगेश्वरी , मुंबई

बहन सुनिता ने एक प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया जिसमें ११ अभ्यासियों ने प्रतिभागिता दिखाई।

भाग ४, अंक २ मार्च २०११
श्री राम चन्द्र मिशन®
एकोज़ इंडिया वार्तापत्र

निबंध प्रतियोगिता २०१०
प्रमाण पत्र वितरण समारोह

परमकुडी

इलाहाबाद

नहरलगुन

अखिल भारतीय निबंध लेखन प्रतियोगिता का आयोजन हर वर्ष किया जाता है जिसका मुख्य उद्देश्य नई पीढी को अपने जीवन के नैतिक एवं मूलभूत तत्वों पर विचार करने हेतु जागरुक करना है। इसके अतिरिक्त इन प्रतिभागियों के हृदय में सहज मार्ग का बीजारोपण कर सार्वभौमि प्रेम,भाईचारा एवं मानवीय एकीकरण के मूल्यों को आत्मसात करना है। इस वर्ष ११५०० शिक्षण संस्थाओं से लगभग ५ लाख युवाओं ने तीन आयु वर्ग समूह में निम्न विषयों पर निबंध लिखे:

- ❖चरित्र जीवन की रक्षा करता है।
- ❖स्वतंत्रता का मतलब स्वछंद्ता नहीं वरन सही एवं गलत की परख में किये जाने वाले ज्ञान से है।
- ❖महत्वाकांक्षा से आकांक्षा की ओर तथा पाने से बनने की ओर।

निबंधों का मूल्यांकन कर प्रतिभागियों को निर्धारित केन्द्रों में पुरस्कार वितरण समारोह में प्रमाण पत्र दिये गये। इस आयोजन मे विधार्थियों के माता–पिता एवं शिक्षकों को भी आमंत्रित किया गया।

मध्य प्रदेश

सम्पूर्ण मध्य प्रदेशजोन में २३ जनवरी को सामयिक कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें खुले सत्र के साथ विजेताओं को पुरस्कार भी वितरित किये गये। पुरस्कार वितरण के पश्चात "जीवन में मूल्यों का महत्व" पर वार्ता दी गई। समारोह के अंत में मिशन एवं आध्यात्मिकता पर एक लघु प्रस्तावना दी गई। इसके फल स्वरूप कई प्रतिभागियों ने मिशन में आने की इच्छा जाहिर की।

अरुणाचल प्रदेश

उत्तर पूर्वी राज्यों में अरुणाचल प्रदेश, शिलोंग (मेघालय), इम्फाल और सी. सी. पुर (मणिपुर) के ५३ शिक्षण संस्थाओं से लगभग ३५० छात्रों नें प्रतिभागिता दिखाई। नहरलागुन आश्रम में ३० जनवरी को पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया जिसमें लगभग १५० प्रतिभगी उपस्थित थे। जोनल एवं स्कूल वर्ग के विजेताओं को प्रमाणपत्र वितरित किये गये। समारोह में मालिक द्वारा १६ अक्तूबर २००९ को दुबई में दी गई वार्ता–"युवाओं को संदेश" का वीडियो दिखाया। अंत में जोनल वर्ग के विजेताओं को अपने अनुभव व्यक्त करने के लिये आमंत्रित किया गया।

तमिलनाडू

प्रथम समारोह का आयोजन ५ फरवरी को गुडालूर के सेंट थॉमस अंग्रेजी माध्यम स्कूल में सम्पन्न हुआ। गुडालूर जैसे दूरस्थ ग्राम में समारोह के आयोजन की सभी प्रतिभागियों ने प्रशंसा की।

६ फरवरी को उटी केन्द्र में समारोह आयोजित हुआ जिसमें लगभग १०० प्रतिभागी उपस्थित थे। उपरोक्त दोनों अवसर पर जोन प्रभारी भाई विश्वनाथ और भाई एम. एम. धानूमूर्ती ने सहज मार्ग पर वार्ताएँ दी। कुछ विद्यालयों के मुख्य–अध्यापकों एवं पुरस्कार विजेताओं ने अपने विचार एवं अनुभव व्यक्त किये।

१३ फरवरी को अविनाशी केन्द्र में एक समारोह आयोजित किया गया जिसमें अविनाशी और पुलियमपट्टी के २० शिक्षण संस्थाओं से २० विजेताओं को प्रमाण पत्र वितरित किये गये। समारोह में लगभग ६० आमंत्रित किये गये भाई एवं बहन उपस्थित थे। भाई टी. वी. विश्वनाथ ने इस निबंध प्रतियोगिता के आयोजन से विद्यार्थियों में अपेक्षित मूल्यों के विकास पर मिशन की कोशिश पर वार्ता दी। भाई सेशा मनिकंदन ने "आज के तनावयुक्त वातावरण में ध्यान की महत्ता" पर वार्ता दी।

६ फरवरी को परमकुडी केन्द्र में ९ विद्यालयों एवं २ महाविद्यालयों के विद्यार्थियों ने सहभागिता दिखाई। इनमें से विभिन्न वर्गों से १४ विद्यार्थीयों को विजेता घोषित किया गया।

भाई कन्नन और भाई मुरुगन ने समझाया कि निबंध प्रतियोगिता का आयोजन अपने चरित्र निर्माण में झाँकने के लिये एक अवसर प्रदान करता है। इसके अतिरिक्त सहज मार्ग पद्धति एवं उसका संसारिक एवं आध्यात्मिक जीवन में लाभ पर वार्ताएँ कराई गयी।

समारोह में आये शिक्षकों को सहज मार्ग पर प्रकाशित पुस्तके भेंट की गई। तदोपरान्त कुछ शिक्षकों एवं विजेताओं ने अपने विचार व्यक्त किये।

आन्ध्र प्रदेश

६ फरवरी को लगभग ५०० प्रतिभागी जिसमें विद्यार्थी, उनके माता–पिता, मुख्य–अध्यापक, प्राध्यापक और विभिन्न संस्थानो के प्रवक्ता विशाखापटनम आश्रम में एकत्रित हुए। इस प्रतियोगिता के लिये १०००

उटी

अवीनाशी

इंदौर

तिनसुकीया

हैदराबाद

रांची

प्रतिभागी थे जिस्मे से १६० लोगो को विजेता घोषित किया गया। केन्द्रीय प्रभारी भाई गोपाल राव, प्रशिक्षक भाई वी.आर.एस.एन शर्मा और भाई पी.वी.जे.के. मूर्ती ने आध्यात्मिक जीवन की महत्ता, लोगों में आध्यात्मिक जागृती, चरित्र निर्माण, मानवीय मूल्य और मूल्याधारित शिक्षा के बारे में व्याख्यान दिये। इस क्षेत्र के ९ विद्यार्थियों ने राष्ट्रीय स्तर पर पुरस्कार जीते।

६ फरवरी को क्षेत्रीय आश्रम तुमकुंठा, हैदराबाद में इस कार्यक्रम को आयोजित किया गया। लगभग २५० शिक्षा संस्थानों और ४००० छात्रों ने इस प्रतियोगिता मे भाग लिया। बहन मधुमती ने इस समारोह को सम्बोधित किया, भाई अनन्त (क्षेत्रिय प्रभारी), भाई श्रीनिवास राव (केन्द्रिय प्रभारी) एवम श्री कमल राज जो कि यू.एन. से थे ने पुरस्कार और प्रमाणपत्र वित्रित किये। शालेय, क्षेत्रिय और राष्ट्रीय स्तर के विजेता इस समारोह मे सम्मिलित हुए। राष्ट्रीय स्तर की प्रथम श्रेणी मे गीतांजली देवाश्रय स्कूल के नवनीत कृषणन ने तिसरा स्थान प्राप्त किया। समारोह के दौरान जिज्ञासु लोगो के लिये सहज मार्ग के बारे मे स्वागत काउंटर मे जानकारी दी गई।

राँची

झारखंड केन्द्रिय विश्वविद्यालय के सचिव, मुख्य अतिथि श्री श्याम नरेन ने रोटरी हॉल मे लगभग ३० बच्चों को क्षेत्रीय स्तर के पुरस्कार और प्रमाणपत्र पत्र प्रदान किये। भाई मनोज तिवारी ने निबन्ध प्रतियोगिता की उपयोगिता के बारे मे व्याख्यान दिया। विभिन्न विद्यालयों के प्रतिभागियो ने इस प्रतियोगिता की तैयारी के अनुभव को आपस मे व्यक्त किया और बताया कि कैसे उनके विचार जीवन के इस सफर और लक्ष्य के बारे मे बदल गये हैं।

मुख्य अतिथी ने व्यक्त किया कि चरित्र जीवन को कैसे सुरक्षित रख सकता है। वास्तव मे असली मकसद और वास्तविक आजादी हमारे जीवन को उद्देश्यपूर्ण कैसे बना सकते हैं। एक प्रतिभागी कि माँ श्रीमती शशी ने सभी प्रतिभागियों के काम को सराहा और शिक्षक श्री आलोक ने मिशन को धन्यवाद किया।

असम

गुवाहाटी का समारोह केन्द्रीय प्रभारी भाई परिजीत फुकान के मिशन के बारे मे सम्बोधन से शुरु हुआ। इसमें ८४ विद्यार्थियों, माता–पिता व शिक्षकों ने भाग लिया। भाई अशोक सेन गुप्ता ने मन के नियमन और हृदय पर ध्यान के बारे मे प्रकाश डाला। उन्होनें एस. आर. सी. एम. और यू. एन. के विश्व भाइचारे व मूल्य आधारित शिक्षा के मकसद को उजागर किया। इसने विद्यार्थियों, शिक्षकों व माता–पिताओं को ध्यान और आध्यात्मिकता के गहरे आचार–विचार के लिये प्रेरित किया।

दोपहर के भोजन अवकाश के दौरान मेहमानों के प्रश्नों के उत्तर प्रशिक्षकों एवं वरिष्ठ अभ्यासियों ने दिए।

२ फरवरी के समारोह मे तिनसुखिया आश्रम मे लगभग ६० विद्यार्थी, शिक्षक, प्रधानाचार्य और अभिभावक सम्मिलित हुए। केन्द्रीय प्रभारी भाई कैलाश अग्रवाल और भाई अशोक सेन गुप्ता ने मिशन और उसकी अंतर्राष्ट्रीय गतीविधियों पर संक्षिप्त मे प्रकाश डाला। उन्होनें छात्रो के जीवन मे ध्यान के महत्व को उजागर किया और कुछ वी.बी.एस.ई. की प्रयोगिक क्रियाए बताई जिसने पश्चिम बंगाल के श्रोताओं को उत्साहित किया।

पश्चिम बंगाल

२३ जनवरी को बाबूजी मेमोरियल आश्रम मे कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम की शोभा मुख्य अतिथी श्री मंगल सांघवी (भोवानीपुरे गुजराती शैक्षणिक संस्था के अध्यक्ष), जानेमाने शिक्षाविध, जनकल्याणकारी एवम सन्मानीय अतिथी श्री केशव प्रधान (सहायक रेजीडेन्ट सम्पादक टाइम्स ऑफ इंडिया) द्वारा बढाई गई।

इस क्षेत्र से लगभग ४५ संस्थानो ने इस साल कार्यक्रम में भाग लिया। इसमे कोलकता के अलावा दार्जलिंग, सिलीगुडी और रानीगन्ज के विद्यार्थियो ने भी भाग लिया। इस कार्यक्रम मे जिसमे पचास पुरस्कार विजेता, ८० माता–पिता व शिक्षक सम्मिलित हुए , विचार उन्मुख वार्ता मुख्य अतिथि एव श्री केशव प्रधान द्वारा दी गई। इसके बाद भाई रिषभ कोठारी ने एस.आर.सी.एम.–यू.एन. की सहभागिता के बारे मे और इन दोनो संस्थानो के एक जैसे उद्देश्यों के बारे मे कुछ शब्द व्यक्त किये। इस क्षेत्र के लिये हर्ष की बात थी कि दो राष्ट्रीय विजेता हुएशा गनेरीवाल, लोरेटो हाउस की (प्रथम श्रेणी १) और इप्सीता दासगुप्ता (द्वितीय स्थान श्रेणी २) कोलकता से थी।

सभी विजेताओ को प्रमाणपत्र के साथ एक प्रति 'यूथ– ए टाइम आफ प्रॉमिस एंड एफर्ट' प्रदान की गई। आश्रम के शांत एवं आध्यात्मिक वातावरण मे सभी आत्म निरीक्षण मे खोये हुए थे एवम मिशन और उसकी गतिविधियो को जानने के लिए उत्सुक हो गए। बहुत से लोग किताबो के काउंटर पर गए, प्रकाशित किताबो को देखा और अभ्यास के बारे मे पूछताछ की। पुरस्कार वितरण एक छोटा प्रयास था विद्यार्थियो और उनके परिवारो तक पहुचने का ताकि वो पुरस्कारो एवम सम्मान से कुछ ज्यादा अपने साथ ले जा पाए। और उनके प्रकाशित चेहरे शायद इस बात के प्रतीक थे कि उनके हृदय मे कहीं गहरी दस्तक हुई है।

केवल निजी वितरण के लिए

भाग ४, अंक २ मार्च २०११

श्री राम चन्द्र मिशन®

एकोज़ इंडिया वार्तापत्र

प्रकाश का केंद्र

जयपुर, जोनल आश्रम

जयपुर का आश्रम (प्रसिद्ध राजस्थान की राजधानी), राजस्थान का जोनल आश्रम है। जयपुर–अजमेर हाईवे पर स्थित, यह आश्रम नगर केन्द्र से १९ कि. मी. और हवाई अड्डे से २३ कि. मि. की दूरी पर है। अगस्त २००२ में खरीदी गयी दस एकड जमीन पर बना जयपूर आश्रम, "मास्टर क्रिएशन" नामक, २१ एकड जमीन पर फैला अभ्यासी उपनगर के समीप स्थित है।

जब २७ अक्तूबर २००२ मे मास्टर भ्रमण करने आये थे, तो सिर्फ बाँस का बना ध्यान कक्ष, रसोई, कार्यालय और मास्टर कुटीर था। इसके पश्चात–कालिक भ्रमण के दौरान, मास्टर ने आश्रम तथा आवासीय उपनगर के निर्माण–कार्य को निश्चित रूप दिया। उनके निर्देश के अनुसार, आश्रम को राजस्थान की शिल्प कलाकारी मे निर्मित किया गया।

१७ मई २००९ मे, मास्टर द्वारा प्रतिष्ठित किये जाने के पन्द्रह महीने मे ही, अभ्यासियों के उत्साहपूर्ण योगदान के साथ, आश्रम का निर्माण सम्पूर्ण हुआ। ३० जुलाई २०१० को, मास्टर ने पूज्य बाबूजी महाराज को यह जोनल आश्रम समर्पित किया और इस सुनहरे अवसर पर राजस्थान और पडोसी राज्य के अभ्यासी उपस्थित थे। अगले दिन अपने संभाषण में, मास्टर ने कहा कि राजस्थान उनकी चहेती जगहों में से एक है। उन्होंने कहा कि जहाँ आत्मसमर्पण हो, वहाँ प्रकृति माँ का आशीर्वाद साथ होता है।

आश्रम सुनियोजित ढंग से बनाया गया है। १०००० वर्ग फुट का ध्यान कक्ष और मास्टर का कार्यालय ६३०० वर्ग फुट का बना है। निवास–गृह में लगभग ३०० अभ्यासियों से ज्यादा ठहरने की व्यवस्था है और तहखाने में कार्यालय स्थित है। पूरे आश्रम को खूबसूरती से रुचिकर बनाया गया है एवं विभिन्न प्रकार के पेड–पौधों से सजाया गया है।

आश्रम के शान्तिपूर्ण एवं पवित्र वातावरण में, अभ्यासियों के कार्य–कलाप और अच्छी तरह से उभरकर आते हैं। विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रम, मूल्याधारित अध्यात्मिक शिक्षा कार्य, निबन्ध लेखन प्रतियोगिता, बच्चे व युवक कार्य–कलाप, जन–सभा सत्र और सामूहिक चर्चा साल भर आयोजित किये जाते हैं।

मास्टर की कृपा है कि यह "प्रकाश का केंद्र", सारे अभ्यासियों को, मिशन के कार्य करने एवं स्वयं को उनके दिखाये गये मार्ग पर विकास करने का अवसर देता है।

To download or subscribe to this newsletter, please visit http://www.sahajmarg.org/newsletter/india For feedback, suggestions and news articles please send email to in.newsletter@srcm.org

© 2011 Shri Ram Chandra Mission ("SRCM"). All rights reserved. "Shri Ram Chandra Mission", "Sahaj Marg", "SRCM", "Constant Remembrance" and the Mission's Emblem are registered Trademarks of Shri Ram Chandra Mission.This Newsletter is intended exclusively for the members of SRCM. The views expressed in the various articles are provided by various volunteers and are not necessarily those of SRCM.